शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संपादकीय

नागरी लिपि भारत को जोड़ने की कड़ी

विनोबा भावे

(यूनेस्को ने 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में घोषित किया है। मनुष्य के हृदय को मातृभाषा ही ग्रहण होती है। भारत में अनेक बोलियां और भाषाएं हैं। इन सभी की जननी संस्कृत भाषा है और संस्कृत भाषा की लिपि नागरी है। अन्य भाषाओं की भी अपनी-अपनी समृद्ध लिपि है, जिसमें उत्कृष्ट कोटि का साहित्य लिखा गया, परंतु लिपि की अज्ञानता के कारण यह भारत के अन्य स्थानों तक नहीं पहुंच पाया। मातृभाषा को यदि नागरी लिपि का आधार मिलेगा तो इस देश की भाषायी और सांस्कृतिक एकता को मजबूत आधार मिलेगा। यहां पर नागरी लिपि के संबंध में विनोबा भावे के विचार प्रस्तुत हैं।)

हिंदुस्तान की एकता के लिए हिंदी भाषा जितना काम देगी, उससे बहुत ज्यादा काम देवनागरी लिपि देगी। इसीलिए मैं चाहता हूं कि हिंदुस्तान की समस्त भाषाएं देवनागरी लिपि में लिखी जायें। हर भाषा के लिए अलग-अलग लिपि सीखनी पड़ती है। एक ही लिपि सारे भारत में होती, तो बहुत ही अच्छा होता। इसका मतलब यह नहीं कि प्रचलित लिपि छोड़ दें। वह भी चले और नागरी भी चले। आज मलयालम वालों को हिंदी सीखने के लिए लिपि भी सीखनी पड़ती है। एक लिपि रहने से ऐसी हालत नहीं होगी। लोकमान्य तिलक ने मांडले जेल में 1915 में 'गीता रहस्य' ग्रंथ लिखा। मलयालम् भाषा में उसका अनुवाद 1956 में हुआ है। वह ग्रंथ मूल मराठी में लिखा है। मलयालम् अनुवाद मूल मराठी पर से नहीं हुआ, उसके बंगाली अनुवाद से हुआ है। इतने बड़े महान् ग्रंथ का तर्जुमा इस भाषा में 41 साल के बाद होता है और वह भी बंगाली अनुवाद से। अगर लिपि एक होती, तो ऐसा न होता। आज हिंदी, मराठी, नेपाली भाषा नागरी लिपि में लिखी जाती है। अगर आपकी भाषा भी नगारी में लिखी जाए, तो आप पंद्रह दिन में हिंदी पकड़ सकते हैं। अब इसका आरंभ होना चाहिए। पर वह कैसे होगा ? मित्रों के बीच जो पत्र-व्यवहार चले, उसमें मलयालम् भाषा नागरी लिपि में लिखी जाये। हमारा भिन्न-भिन्न भाषावालों से पत्र व्यवहार होता है - बंगाली, कन्नड़, तेलुगु, तमिल आदि। हमारी इच्छा रहती है कि वे नागरी में लिखें, तो हमें पढ़ने में कुछ कष्ट नहीं होगा। राष्ट्रभाषा हिंदी सीखने की जितनी जरूरत है, उतनी ही जरूरत इस बात की है कि अनेक भाषाओं की लिपि एक बने।

मेरी ऐसी भी राय है कि तेलुगु, मलयालम्, बंगाली आदि जो समर्थ लिपियां हैं उनमें हिंदी लिखी जाये। कन्नड़वाले हिंदी सीखना चाहतें तो पहले कन्नड़ लिपि में सीखें और फिर नगारी सीखें, तो भाषा सीखना आसान होगा। सार यह कि राष्ट्रलिपि में सब भाषाएं और सब लिपियों में राष्ट्रभाषा लिखी जाये।

सभी भाषाओं के लिए नागरी समर्थ

हम चाहते हैं कि हिंदुस्तान की कुल भाषाएं नागरी में भी लिखी जायें। उससे बहुत लाभ होगा। उससे एक-दूसरे की भाषा सीखने में बहुत मदद होगी। आज भी कई भाषाएं नागरी में लिखी जाती हैं। संस्कृत, पाली, अर्धमागधी का बहुत-सा साहित्य नागरी में है। उसके अलावा

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिंदी और मराठी जैसी दो महान भाषाएं नागरी में लिखी जाती हैं। नेपाली भी नागरी में लिखी जाती है। गुजराती लिपि भी नागरी का ही एक प्रकार है। नागरी की ऊपर की शिरोरेखा हटते ही वह गुजराती बन जाती है। सिर्फ दो-चार अक्षरों का फर्क है। उसे वे लोग बदल देंगे, तो वह लिपि भी नागरी बन जायेगी। दूसरी लिपियां भी हैं बंगाली वगैरह, वे भी नागरी के बहुत नजदीक हैं। हिंदुस्तान की सब भाषाएं नागरी में लिखी जायें, तो एकता के लिए बहुत उपयोगी होगा।

भाषा सीखने के लिए नागरी सहायक

मैं उर्दू सीखना चाहता था तो प्रथम उर्दू की किताब जो नागरी लिपि में मिली वह मैंने ली। और नागरी लिपि में उर्दू उत्तम सीख ली। उसके बाद उर्दू लिपि सीखी। वैसे भी भारत में जो लोग महाराष्ट्र में, गुजरात में, बंगाल में इंग्लिश सीखना चाहते हैं उनको प्रथम नागरी लिपि में इंग्लिश सीखनी चाहिए। नागरी लिपि में अच्छी इंग्लिश आ जाये तो उसके बाद रोमन लिपि भी सीख सकते हैं। यह शिक्षण की दृष्टि से उत्तम पद्धति होगी। एकदम दूसरी भाषा और दूसरी लिपि एकसाथ सीखना गलत है। प्रथम हमारी अपनी परिचित लिपि में नयी भाषा सीखनी चाहिए - अगर हो सकता है तो। वैसी ही कोशिश बाबा ने हर भाषा के बारे में की। तेलुगु कैसे सीखी ? मैंने उनसे पूछा कि तेलुगु भाषा में नागरी लिपि में लिखा कोई ग्रंथ है क्या ? तो बोले कि संस्कृति गीता तेलुगु में लिखी उपलब्ध है - तो वह मैंने ले ली। धर्मक्षेत्रे - पहले ध, पीछे र्म, पीछे क्षे, पीछे त्रे। धर्मक्षेत्रो पढ़ना शुरू कर दिया। उस पर से तेलुगु की सारी लिपि का अभ्यास मुझे हो गया। इस प्रकार से भाषाएं सीखने की कोशिश की। प्रथम जिस लिपि का मेरा परिचय है उस लिपि में, उसके बाद उनकी लिपि में। जहां तक हो सकता था वहां तक यह प्रक्रिया की। जहां नहीं हो सकता था, वहां नयी लिपि सीखी। उर्दू, उर्दूलिपि के अलावा नागरी में भी लिखी जाये, तो बहुत लाभ होगा। हिंदीवाले उर्दू की अच्छी-अच्छी किताबें पढ़ने लगेंगे, तो उर्दू के अच्छे-अच्छे शब्द हिंदी में आयेंगे। अगर उर्दू भाषा उर्दू में ही लिखी जाये और हिंदी नागरी में ही लिखी जाये, तो हिंदी जानने वाले उर्दू कम पढ़ेंगे। उस हालत में उर्दू के अच्छे-अच्छे शब्द हिंदी में नहीं आयेंगे और हिंदी संस्कृत से लदी हुई रहेगी। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि उर्दू नागरी में भी लिखी जाये। 'मैं प्रयत्न करता हूं' यह हिंदी है और 'मैं कोशिश करता हूं' यह उर्दू है। प्रयत्न और कोशिश दोनों सादे शब्द हैं और दोनों चलने वाले हैं, परंतु धीरे-धीरे हिंदी में प्रयत्न शब्द ज्यादा चलेगा, क्योंकि वह शब्द कन्नड़, तमिल, मलयालम्, तेलुगु, गुजराती, बंगाली, मराठी आदि भाषाओं में है। परंतु उर्दू नागरी में भी लिखी जायेगी, तो कोशिश शब्द भी बना रहेगा। इस तरह से ऊर्द और हिंदी बहुत नजदीक आती चली जायेंगी।

नागरी दक्षिण के लिए भी लाभदायी

तमिलनाड के एक भाई ने कहा कि 'देवनागरी की तमिलनाड में जरूरत नहीं।' हमारा कहना यह है कि उत्तर भारत वाले कन्नड़ या दूसरी भाषा सीखने के लिए उसका उपयोग करें। जिसे उत्तर भारत में तमिल सीखनी है वह नागरी लिपि में तमिल सीखे। केवल उत्तर वाले नहीं, कन्नड़ वाले अगर सीखना चाहें और तेलुगु वाले, केरलवाले अगर सीखना चाहें तो उनको भी नागरी लिपि अनुकूल पड़ेगी। नहीं तो क्या होगा? केरलवाले को तमिल सीखने के लिए तमिल लिपि, गुजराती सीखने के लिए गुजराती लिपि सीखनी पड़ेगी। इस वास्ते अगर ये सब भाषाएं

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नागरी लिपि में भी चलेंगी तो तमिलनाड के लिए नहीं, दूसरे प्रांतवालों को तमिल सीखने के लिए नागरी मदद देगी। वैसे ही तमिलवालों को दूसरी भाषा सीखने के लिए भी मदद देगी।

रोमन नहीं नागरी ही

सारे भारत के लिए एक लिपि नागरी ही हो सकती है। कुछ लोग समझते हैं कि वह रोमन लिपि हो सकती है। लेकिन यह उनकी गलत धरना है। वे नहीं समझते कि आज नागरी का क्या स्थान है ? हिंदी-मराठी-नेपाली नागरी में लिखी जाती है। हमने पवनार आश्रम में बैठे-बैठे नेपाली भाषा का अध्ययन किया, क्योंकि लिपि नागरी थी। इसके अलावा पंजाबी और नगरी में बहुत थोड़ा फर्क है। एक घंटे की मेहनत में सीख सकते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि संस्कृत का कुल आध्यात्मिक साहित्य नागरी लिपि में है। इतना वैभव किसी दूसरी लिपि में नहीं है। इसके अलावा जैनों के ग्रन्थ जो अर्धमागधी में हैं, उनकी लिपि भी नागरी है। बौद्धों के त्रिपिटकों का बहुत सारा हिस्सा नागरी में आ गया है।

कुरान के लिए अरबी सीखने के बाद मुझे लगा कि फारसी का भी कुछ अध्ययन कर लेना चाहिए। फिर उर्दू का भी उसके व्याकरण के साथ अध्ययन किया। इन सबमें मेरी आँखे काफी बिगड़ी। इसलिए आखिर मैं इस नतीजे पर आया कि हिन्दुस्तान की सब भाषाओं के लिए नागरी लिपि चलनी चाहिए। मैंने उर्दू भाषा के प्रेमियों को बहुत दफा समझाया है कि अगर वे उर्दू की खुमारी का स्पर्श हमारी राष्ट्रभाषा कायम रहे ऐसा कहते हैं तो उनको उर्दू के उत्तम-उत्तम ग्रंथों को, इतना ही नहीं फारसी-अरबी के भी अच्छे-अच्छे ग्रंथों को नागरी लिपि में लाना चाहिए।...नागरी लिखावट में भी उर्दू लिखी जाए तो वह हिन्दुस्तान की बड़ी सेवा करेगी। उससे मुश्तरका-कौमियत (जमातों में सहयोग) पनपेगी। उर्दू अदब की अच्छी किताबें नागरी में शाया (प्रकाशित) करने से उस खजाने की कद्र भी बढ़ेगी।

स्वीकार प्रथम बाद सुधार

बाबा (विनोबा) नागरी लिपि पर जोर देता है, वह भी अभिमान के कारण नहीं है। वह निरभिमान वृत्ति से ही सोचता है। सोचने पर मालुम होता है कि नागरी लिपि काफी पूर्ण लिपि है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि उसमें सुधार की गुंजाइश ही नहीं है। कुछ तो सुधार करने पड़ेंगे। किन्तु प्रथम सुधार नहीं, प्रथम स्वीकार। स्वीकार के बाद सुधार। यदि हम लिपि सुधरने में लगेंगे और बाद में देवनागरी भारत में चले ऐसा सोचेंगे तो वह चलनेवाली है नहीं। क्योंकि सुधार के फेर में पड़ेंगे तो दोनों बिगड़ेंगे। इस वास्ते पहले सारा भारत स्वीकार करे, फिर सुधार करना कठिन नहीं। वह किया जा सकेगा। बाबा (विनोबा) ने निरभिमान और निरहंकार वृत्ति से ही देवनागरी लिपि सुझायी है। बाबा लगभग 20-22 भाषाएँ जानता है। जितनी जानता है, उन सबके कोश उसने पढ़े हैं। प्रवाह में हिन्दुस्तान की अनेक भाषाएँ और करीब-करीब सभी लिपियों का अध्ययन हुआ। हिन्दुस्तान की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने की इच्छा होने के कारण यह अध्ययन आध्यात्मिक दृष्टि से किया गया। उसी समय लिपि सुधार की तरफ भी ध्यान गया और चिंतन कर मैं निश्चित निर्णय पर पंहुचा। **(विनोबा साहित्य खंड 20)**